UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0

ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 9, No. 12

December, 2022

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by

VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh

email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

Impact Factor : 6.0
ISSN : 2393-8358

PEER REVIEWING BOARD

- Dr. Parada Wongsombut - Program in Vocational Education, Faculty of Education, Kasetsart University, Thailand
- Dr. Som Prasad Khatiwada - Associate Professor, Tribhuvan University, Nepal
- Dr. K. Khatter - Assistant Professor of Economics, Jaipur
- Dr. D.P. Singh - Assistant Professor, Commerce, Chas College, Chas, Bokaro
- Dr. Dinesh Bansilal Patil - Department of Panchakarma, Pune
- Dr. Sarita Rani - Assistant Professor, Department of English, TMU Mooradabad
- Dr. G.V. Satya Sekhar - Asst. Professor, Department of Finance, Visakhapatnam
- Dr. A. Appa Rao - Sr. Production Associate, Hyderabad
- Dr. Ashutosh Singh - Department of Pathology, Meerut
- Dr. U. Kondala - Asst. Professor, Buddhist Studies, Jammu
- Dr. Kahkashan M. Parveen - Fine Arts, Lucknow
- Dr. S. Arun Kumar - Sociology, Coimbatore

ADVISORY BOARD

- Prof. Pranam Dhar - Department of Commerce & Management, West Bengal
- Prof. Manisha Panwala - Department of Business & Industrial Management, Veer Narm South Gujarat University, Surat
- Prof. Y.V.S. Subrahmanya Sarma - D.N.R. College, Bhimavaram

MANAGING DIRECTOR
Mushtaque Ahmad

© Publisher
Published by VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com
Mob. 9415388337

ISSN : 2393-8358

▸	सरयूपार में धार्मिक परम्परा – रूद्रपुर के विशेष संदर्भ में **पीयूष मिश्र**	67-72
▸	व्याकरणशास्त्रेषु शब्दतत्त्वविचारः **स्वाती ईश्वर लोडे**	73-76
▸	Lung Functions, Pulse Rate and Arterial Blood Pressure in Field Hockey Players and Non Players - A Comparative Study **Dr. Akhil Mehrotra & Tenzing Shenphen**	77-79
▸	नेहरू के वैचारिकी में लोकतांत्रिक समाजवाद **प्रशान्त कुमार**	80-82
▸	अष्टाध्याय्यां लुप्तविभक्तिकसूत्राणां विशिष्टमध्ययनम् **कौमुदी नन्दनम्**	83-85
▸	बौद्धसिद्धान्तसमन्वयः **पुरुषोत्तममिश्रः**	86-88
▸	क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार की कलात्मक अभिव्यक्ति **देवता प्रसाद मौर्या**	89-94
▸	शोध प्रविधि का स्वरूप और उनकी सांख्यिकीय पद्धतियाँ **अनन्त नारायण मिश्रा**	95-102
▸	भारतीय आधुनिक कलाकार कृष्ण शामराव कुलकर्णी **श्वेता मौर्या**	103-105
▸	Cinema and Gender: A Feminist Exploration **Dr. Manisha Misra**	106-112
▸	समकालीन हिंदी सिनेमा का दलित विमर्श **मनोज प्रसाद रजक**	113-114
▸	पूर्वी उत्तर–प्रदेश के स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का सूचना क्रांति के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन **डॉ० योगेश पाठक**	115-118
▸	वृद्धावस्था : वरदान अथवा अभिशाप **डॉ0 वन्दना**	119-121
▸	ध्वन्यालोक में प्रथम ध्वनि कारिका में 'इति' शब्द के प्रयोग की सार्थकता **डॉ0 सुनीता मीना**	122-126
▸	पत्रकारिता का अर्थ एवं महत्त्व **डॉ0 भास्कर पाण्डेय**	127-130
▸	Juvenile Delinquency in the Indian Legal System – A Critical Analysis **Dr. Yogendra Kumar Verma**	131-136

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 9, No. 12, December, 2022
Impact Factor : 6.0
ISSN : 2393-8358

समकालीन हिंदी सिनेमा का दलित विमर्श

मनोज प्रसाद रजक
शोधार्थी (पी-एच.डी.), हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

हिंदी साहित्य की तरह सिनेमा में भी इस एक सदी के दौरान कई नई आन्दोलन, परम्पराएँ और वाद आते-जाते रहे हैं लेकिन दलित समाज आज भी हाशिये पर ही छूटा हुआ है | मूक फिल्मों से शुरू हुए इस सफ़र में सिनेमा ने धार्मिक और पौराणिक, सामजिक और राष्ट्रवादी, कला और समानांतर, नए और प्रयोगवादी सिनेमा के दौर देखे है लेकिन बोलबाला हमेशा व्यवसायिक फिल्मों का ही रहा है | जब हम हिंदी सिनेमा में दलित फिल्मों की बात करते है तो सबसे पहले प्रश्न उठता है है कि हिंदी सिनेमा ने दलितों के प्रश्न को सही तरीके से उठाया है | "यह बेहद तकलीफदेह तथ्य है की सौ साल से अधिक हमारे हिंदी सिनेमा में हाशिये के समाज को लेकर कभी भी गंभीरता से कोई काम नहीं किया गया | दलित विमर्श और दलित चेतना तो दूर की बात है, यहाँ समाजिक फिल्मों के नाम पर बने सिनेमा में भी दलित पात्रों अथवा कथानकों का चित्रण इमानदारी से नहीं हुआ है |"[1] जब हम इस स्थिति की कारणों पर विचार करते है तो पहला तर्क यही दिया जाता है कि सिनेमा एक शुद्ध व्यवसायिक कला है अत: यहाँ वही बनाया और दिखाया जाता है जो बिकता है | लेकिन इस तर्क में ज्यादा दम इसलिए नजर नहीं आता क्योंकि अधिकांश फिल्मकार अपनी सिनेमा को समाज से प्रेरित बताते रहे है |

"सिनेमा के शुरुआत में 'प्रभात', 'न्यू थियेटर्स' एवं 'बाम्बे टाकीज' फिल्म कंपनियों ने दलितों के प्रति करुना के भाव दर्शाने वाली कुछ फ़िल्में अवश्य बनाई पर ये फ़िल्में वैसा मजबूत आन्दोलन खड़ा नहीं कर पाई जिसके चलते दलित समस्या सिनेमा के परदे पर मुख्य विषय बनकर उभरती |"[2] हम देखें तो उस दौर में सक्रिय नितिन बोसे, चंदूलाल शाह, महबूब खान, बीएन रेड्डी, विजय भट्ट, सोहराब मोदी, मास्टर विनायक, ख्वाजा अहमद अब्बास, विमल राय और चेतन आनंद फिल्मकारों ने राष्ट्र और समाज को रखकर अच्छा सिनेमा तो बनाया लेकिन इन फिल्मों में उतनी तल्खी के साथ दलित आवाज को नहीं उठाया गया जितनी ऐसा किये जाने की जरुरत थी |

हम यह कह सकते हैं कि पहती फ़िल्म जो अस्पृश्यता के बारे में थी जो कि गाँधी जी के सुधार-आन्दोलन से प्रेरित थी फ्रेंज ऑस्टेन की 'अछूत कन्या' जो 1936 में बनाई गई| यह फ़िल्म प्रताप नाम के ब्राहमण लड़का और कस्तुरी नाम की अछूत लड़की की एक दारुण प्रेम-कहानी है | वास्तव में 1936 में ऐसे विषय के बारे में बताना बहुत बड़ी बहादुरी थी | अफ़सोस की बात सिर्फ़ यह है कि इतने सालों में किसी दूसरे निर्देशक ने कुछ ऐसा नहीं किया | शायद फ्रान्ज़ ऑस्टेन के लिए ऐसी कहानी को दिखाना इतनी मुशकिल बात नहीं थी क्योंकि वह जर्मनी से भारत आया था और जिसके लिए यह विषय कोई बड़ा निषेध नहीं था | इसके बाद 1959 में बिमल राय ने 'सुजाता' की फ़िल्म बनाई जो फ़िर से अछूत लड़की और ब्राम्हण लड़के के प्रेम की कहानी है | लेकिन इन फिल्मों में जो सवाल उठाये गये थे वों वैक्तिक दिखाई पड़ते थे, इसमें दलित समाज का संघर्ष और उसकी पहचान का सवाल गौण था | इसके बाद समानांतर सिनेमा के दौर में देखे तो 'अंकुर', 'दामुल', 'पार' आदि कई फिल्मों का निर्माण हुआ | परन्तु ये फ़िल्में दलित समाज की संघर्ष और उनके सवालों से टकराने से बचती रही |

समकालीन समय में हिंदी दलित फिल्मों में हम समाज और सत्ता से किये गए दलितों के चुभते सवाल और उनके संघर्ष को हम फिल्म के केंद्र में पाते हैं | इन्हीं फिल्मों में से एक नीरज घेयवान की 'मसान' फिल्म हैं | फ़िल्म में दो कहानियां दिखाई गई हैं | अंत में दोनों कहानियों का मिलन हो जाता है | पहली कहानी है देवी की | देवी का किरदार ऋचा चड्डा ने निभाया है | देवी अपने प्रेमी पीयूष के साथ होटल के एक कमरे में होती हैं, तभी पुलिस छापा मार देती है | पुलिस के हत्थे ये दोनों चढ़ जाते हैं और फिर देवी के पीयूष